Name of the Guest Teacher - Khushbu kumari, Class- B.A-I (subsidiary)
dept of Political Science, V.S-J. College, Rajnagar, Madhubani, lnmu

Topic - राज्य के तत्व

Page No.
Date

राज्य के तत्वों के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों द्वारा अपने विचार व्यक्त किए गये है। डॉ. गार्नर के अनुसार राज्य के निम्न तत्व है —

(1) मनुष्यों का समुदाय
(2) एक प्रदेश जिसमें वे स्थाई रूप से रहते है।
(3) आन्तरिक सम्प्रभुता और बाहरी नियंत्रण से स्वतंत्रता
(4) एक ऐसा राजनीतिक संगठन जिसके द्वारा जनता की सामूहिक इच्छा की अभिव्यक्ति हो सके और उसे कार्यरूप में परिणत किया जा सके।

गैटल ने राज्य के चार तत्व - जनता, प्रदेश, सरकार और सम्प्रभुता बताए है। वर्तमान समय में राज्य के इन चार तत्वों के विचार को स्वीकार किया जाता है। ये चार तत्व निम्नलिखित है —

(1) जनसंख्या — व्यक्तियों से मिलकर ही राज्य का निर्माण होता है। अतः सभी विद्वान जनसंख्या को राज्य के आवश्यक तत्व के रूप में स्वीकार करते हैं। लेकिन एक राज्य के अन्तर्गत कितनी जनसंख्या होनी चाहिए, इस सम्बन्ध में विद्वानों के विचारों में मतभेद है। प्लेटो अरस्तू, रूसो जैसे विद्वान प्रत्यक्ष प्रजातन्त्रात्मक शासन को सर्वश्रेष्ठ समझते थे और क्योंकि प्रजातंत्र के इस रूप

को कम जनसंख्या वाले राज्य में ही अपनाया जा सकता है। अतः प्लेटो ने एक आदर्श राज्य में 5,040 नागरिक का होना सही बताया है। इसी प्रकार लास्की ने एक राज्य की जनसंख्या 10 हजार बतलायी है।

वर्तमान समय में गार्नर के शब्दों में कहा जा सकता है कि "जनसंख्या राज्य के संगठन के निर्वाह के लिए संख्या में पर्याप्त होनी चाहिए तथा वह इससे अधिक नहीं होनी चाहिए, जितनी के लिए भूखण्ड तथा राज्य के साधन पर्याप्त हो।"

(2) निश्चित प्रदेश — राज्य का दूसरा तत्व निश्चित प्रदेश है। राज्य राजनीतिक रूप से संगठित मनुष्यों का समुदाय होता है और इन व्यक्तियों में संगठन स्थापित करने तथा उसे शान्ति और व्यवस्था बनाए रखने के लिए इन व्यक्तियों को स्थाई रूप से एक निश्चित क्षेत्र में रहना अनिवार्य है। निश्चित प्रदेश का अभिप्राय केवल भू-क्षेत्र से ही नहीं बल्कि उसके अन्तर्गत निम्नलिखित बातें शामिल होती हैं—

(1) राज्य की सीमा के अन्तर्गत आने वाला भूमि प्रदेश,
(2) भूमि प्रदेश का जल भाग
(3) प्रादेशिक जल क्षेत्र, जैसे — किसी राज्य के समुद्र तट के आस-पास तीन मील या बारह मील का समुद्र,

Scanned with CamScanner

(4) राज्य की सीमा के अन्तर्गत आने वाला वायुमण्डल।

(3) सरकार — सरकार राज्य का संगठनात्मक तत्व है। किसी निश्चित प्रदेश के निवासी तब तक राज्य का रूप धारण नहीं कर सकते, जब तक कि उसका एक राजनीतिक संगठन न हो। सरकार राज्य का व्यावहारिक पक्ष है। प्राचीन समय में सरकार का संगठन सरल और उसके कार्य सीमित थे परन्तु वर्तमान समय में सरकार के संगठन ने जटिलता प्राप्त कर ली है। सरकार राजतन्त्रात्मक, कुलीनतन्त्रात्मक या प्रजातन्त्रात्मक किसी भी प्रकार की हो सकती है, यद्यपि प्रजातन्त्रात्मक सरकार को अन्य सरकारों की तुलना में निश्चित रूप से श्रेष्ठ समझा जाता है।

(4) सम्प्रभुता — उपर्युक्त तीन तत्वों से भी अधिक महत्वपूर्ण तत्व सम्प्रभुता है। एक निश्चित प्रदेश में रहने वाले लोग उस समय तक राज्य का निर्माण नहीं कर सकते, जब तक कि उनके अधिकार में सम्प्रभुता न हो।

राज्य की सम्प्रभुता से हमारा तात्पर्य यह है कि राज्य आन्तरिक रूप से उच्चतम है अर्थात् अपने क्षेत्र में स्थित सभी व्यक्तियों एवं समुदायों की आज्ञा प्रदान कर सके, इन आज्ञाओं

का पालन कर सके तथा वह बाहरी नियंत्रण से मुक्त हो अर्थात् दूसरे राज्यों के साथ अपनी इच्छानुसार सम्बन्ध स्थापित कर सके। इस प्रकार कहा जा सकता है कि प्रत्येक राज्य के अन्तर्गत जनसंख्या निश्चित प्रदेश, नियमपूर्वक स्थापित सरकार और सम्प्रभुता होनी चाहिए। इनमें से किसी भी एक तत्व के अभाव में उस संगठन को राज्य नहीं कहा जा सकता है।